डॉ. विलासराव क. घाटे
प्राचार्य,
राजर्षी छत्रपती शाहू महाविद्यालय,
कोल्हापुर।

-: प्रमाण - पत्र :-

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री. पंडित श्रीपती गाडे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु - शोध प्रबंध "रजनी पनिकर के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन" मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है। श्री. पंडित श्रीपती गाडे के प्रस्तुत शोध - कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर।

दिनांक : 31 : 5 : 93

[डॉ. विलासराव क. घाटे]
शोध - निर्देशक

-: अनुक्रमणिका :-

			पृष्ठ क्रमांक
प्रस्तावना -			
प्रथम अध्याय	-	रजनी पनिकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।	१ - १३
द्वितीय अध्याय	-	रजनी पनिकर के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय।	१४ - ४७
तृतीय अध्याय	-	आधुनिक परिवेश में नारी।	४८ - ७०
चतुर्थ अध्याय	-	रजनी पनिकर के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन।	७१ -१२५
पंचम अध्याय	-	उपसंहार	१२६-१३४
		संदर्भ ग्रंथ सूची।	१३५-१३८

x-x-x-x-x

-: प्र स्ता व ना :-

विषय का महत्व :-

स्वातंत्र्योत्तर कथाकारों में रजनीजी का अपना एक अलग स्थान है। आधुनिक साहित्यकारों में आपका नाम बडे आदारसहित याद किया जाता है। आपका साहित्य जितना बहुचर्चित है, उतनाहही विवादस्पद है। आपके साहित्य में सहृदय पाठकों को झकझोरने की जबर्दस्त क्षमता है। रजनी जी ने अपने हृदय के भाव-तरंग अनुठी शैली में अपने साहित्यद्वारा बहा दिये है। अनुभवों की सच्चाई और सशक्त एवं सजीव रचना-शैली के कारण रजनीजी सफल उपन्यासकार और कहानीकार मानी जाती है।

आपके उपन्यासों में आधुनिक नारी जीवन बडे मार्मिक ढंग से चित्रित हुआ है। नारी-जीवन के विविध पहलूओं को रजनी जी ने अपनी कुशल कलम से चित्रित करने का प्रयत्न किया है। आधुनिक नारी के हृदय की परत-पर-परत खोलकर उसे व्यक्त करने का प्रयत्न रजनी जी ने किया है। उन्होंने अपने द्वारा निर्पित पात्रों के अंतर्मन में प्रवेश कर उनके हृदय को उकसाने का चतुरता से प्रयत्न किया है। पात्रों के हृदय में प्रवेश कर उनके भाव-विश्व को उजागर करने की क्षमता कुछ थोडे ही विद्वानों में होती है। रजनी जी को यह अद्भुत और दिव्य शक्ति प्राप्त थी।

प्रेरणा :-

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में मैं कुछ अध्ययन की किताबे ढूँढ रहा था, तो अनायास मेरी नज़र "दूरियाँ" उपन्यास पर स्थिर हो गई। मैंने जब दूरियाँ उपन्यास पढा तब उस उपन्यास ने मेरे मन-मानसपर जबर्दस्त आघात किया। उपन्यास के नारी पात्रों ने मेरे दिमाग में हलचल मचा दी। इस उपन्यास की नायिका "नमिता" का प्रो. हरी को कुँआरी माँ बनने का अधिकार माँगना और "चारु" का प्रेम-भंग होने के

कारण सभी बंधनों को तोडकर हर एक के साथ खुले आम घुमना-फिरना। यह उपन्यास पढ़कर मुझे विश्वास हो गया कि इस लेखिका की लेखनी में नारी के आधुनिक रूप को स्पष्टतासे व्यक्त करने का सामर्थ्य है। मैं लगातार जहाँ से भी मिले, रजनी जी के उपन्यास पढ़ता रहा। दुर्भाग्य की बात यह है कि लेखिका की इतनी श्रेष्ठतम कृतियां न किसी महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में पूर्ण रूप से उपलब्ध हो सकीं। आपकी वंदनीय बहन कान्ता सिन्हा ने मेरी बडी-भारी मदद की। आपकी उपन्यास कृतियाँ और कुछ साहित्य मुझे उन्हीं से प्राप्त हो गया। सचमुच "दूरियाँ" ने मेरे मन-मानसपर जबर्दस्त प्रभाव डाला और मैंने रजनी जी के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन पर लघु-प्रबंध लिखने का दृढ़ संकल्प किया।

रजनी पनिकर के साहित्य पर सम्पन्न शोध-कार्य :-

रजनी पनिकर के साहित्य पर अब तक दो शोध प्रबंध लिखे गये है।

१] रामलोलए द्विवेदी द्वारा संपादित शोधप्रबंध -"रजनी पनिकर के उपन्यास साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन"[रीवा]।

२] कान्ता सिन्हा द्वारा लिखित शोध प्रबंध --"श्रीमती रजनी पनिकर के व्यक्तित्व और कृतित्व का अनुशीलन"[नागपुर]।

रजनी जी के उपन्यासों में आधुनिक नारी-जीवन बडे मार्मिक ढंग से चित्रित हुआ है। किन्तु उनके उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन का समग्र मूल्यांकन होना अभी शेष था। अतः मैंने उनके उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन इस विषय पर अध्ययन करना मेरे प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का विनम्र प्रयास रहा है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में बाँधने का प्रयास किया है।

प्रथम अध्याय - रजनी पनिकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :- पृ. १ - १३.

साहित्यकार के अध्ययन, चिंतन, मनन और जीवनानुभूतियों तथा परिवेश का निचोड उसकी रचनाएँ होती है। रचनाकार के व्यक्तित्व पर परिवेश का प्रभाव होता है और व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब उसके साहित्य में दिखाई देता है।

अत: रचनाकार तथा उसकी रचनाओं को सही मायने में परखने के लिए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को देखना आवश्यक होता है। इस अध्याय में मैंने रजनी जी के व्यक्तित्व के अंतर्गत जीवन परिचय तथा वंश, बाल्यकाल और शिक्षा, उसका निजी पारिवारीक जीवन आदि विषयों को लेकर चर्चा की है। व्यक्तित्व के पश्चात रजनी जी ने अपने जीवन काल में जिन साहित्यिक कृतियों को जन्म दिया, उन्हें उजागर करने का प्रयत्न किया है।

द्वितीय अध्याय - रजनी पनिकर के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय :- पृ. १४- ४७.

इस अध्याय को थोडा विस्तार से लिखा है, क्योंकि रजनी जी के सभी उपन्यासों का परिचय करा देना मेरा मंतव्य था। अतएव उस अध्याय में लेखिका के सभी उपन्यासों की संक्षेप में विषयवस्तु लिखने का प्रयत्न किया है। उद्देश्य यह था कि लेखिका के साहित्य से अनभिज्ञ पाठक विषयवस्तु पढ़कर उसके साहित्य की ओर उन्मुख हो सकें।

तृतीय अध्याय :- आधुनिक परिवेश में नारी :- पृ. ४८ - ७०.

इस अध्याय में वैदिककाल, मध्यकाल और स्वातंत्र्योत्तर काल की नारी की स्थिति एवं गति का अंकन किया है। वैदिक काल की नारी की गौरवमय स्थितिपर संक्षेप में प्रकाश डाला है। और मध्यकालीन नारी की अवनति की ओर संकेत मात्र किया है। परंतु आधुनिक काल के नारी को उसके विविध पहलूओं को उसकी विविध समस्याओं को और उसकी बनती-बिगडती स्थिति को सूज्ञ पाठकों के सम्मुख उपस्थित करना मेरा प्रधान लक्ष्य रहा। इसी कारण आधुनिक परिवेश में नारी इस विषय को लेकर इस अध्याय में मैंने काफी चर्चा की है।

चतुर्थ अध्याय :- रजनी पनिकर के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन :- पृ. ७१ - १२५.

यह अध्याय इस लघु-प्रबंध का मेरुदंड है। वस्तुत: तृतीय अध्याय इस अध्याय की ही पृष्ठभूमि है। इस अध्याय में रजनी जी के सभी उपन्यासों के प्रधान और प्रभावशाली नारी पात्र और उनका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन, उनकी पीडाएँ और यातनाएँ,

उनकी स्वातंत्र्यता एवं आधुनिकता आदि का विश्लेषण किया है।

पंचम अध्याय - उपसंहार :- पृ. १२६ - १३

उपसंहार में संपूर्ण प्रबंध का संक्षेप में सार है। साथ ही रजनी जी का आधुनिक नारी के प्रति कौनसा दृष्टिकोन है यह व्यंजित किया है। उनकी विद्रोही और आस्थावादी दृष्टिने नारी कोमलता, ममता, करूना की भावना, सूक्ष्म सौंदर्य-बोध और लोकमंगल की भावना को किस प्रकार उजागर किया है इस पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। साथ ही इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में जो प्रश्न उभर उठे थे, उनके उत्तर उपलब्धियों के रूप में देने का प्रयास किया है।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित सवाल उभर उठे थे —

१] रजनी पनिकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विकास किस परिवेश में हुआ है ?

२] रजनी जी ने अपने अधिकांश उपन्यासों में नारी को ही प्रधानता क्यों दी है ?

३] रजनी जी के उपन्यासों की प्रमुख नारी समस्याएँ कौनसी है ?

इन प्रश्नों के उत्तर उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में देने का प्रयास किया है।

ऋणनिर्देश :-

मेरा यह सौभाग्य रहा कि पूज्य डॉ. विलासराव क. घाटे प्राचार्य, रा. छ. शाहू कालेज, कोल्हापुर के श्री चरणों में बैठकर शोधकार्य कर सका। उनके अनमोल पथ-प्रदर्शन से ही यह शोध-कार्य पूर्ण हो सका। उन्होंने समय-समयपर जो मार्गदर्शन किया मेरी छोटी-मोठी समस्याएँ सुलझायी, मेरा उत्साह बढ़ाया, इसी कारण यह शोध-कार्य सम्पन्न हो चुका। मैं अजीवन उनका कृतज्ञ रहूँगा।

रजनी जी की अनुजा श्रीमती कान्ता सिन्हा के सहयोग से मुझे बडा लाभ हुआ। उन्होंने रजनी जी के उपन्यास और उनकी साहित्यिक सामग्री मुझे उपलब्ध करा दी। मैं प्रत्यक्ष नागपुर जाकर उनके घर-पर उनसे मिला। मेरा उनका पूर्व परिचय न होकर भी उन्होंने एक परिचित व्यक्ति की तरह बडा आदर किया। उनके प्रति शब्दों में कृतज्ञता व्यक्त करना नामुमकिन है।

डॉ. वसंतराव केशव मोरे शिवाजी विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग प्रमुख, कोल्हापुर तथा प्रा. सौ. एम. एस. जाधव और प्रा. श्री. एस. एम. जाधव विवेकानंद कालेज, कोल्हापुर इन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन किया। इससे मुझ में यह लघु-प्रबंध लिखने का साहस निर्माण हुआ। अतएव उनके प्रति आभार व्यक्त करना मेरा दायित्व समझता हूँ। उनका सदा के लिए मैं ऋणी रहूँगा।

शिवाजी विश्व-विद्यालय के अधिव्याख्याता डॉ. शहा, डॉ. पाटील, प्रा. कणाबरकर, प्रा. तिवले, प्रा. वेदपाठक, प्रा. हिरेमठ, प्रा. सौ. पडलकर, प्रा. सौ. भागवत आदि के मार्गदर्शन का भी मुझे बहुत लाभ हुआ। उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

यह शोध प्रबंध सम्पन्न होने के पीछे मेरे पूज्य माता-पिता के अनमोल आशिष, मेरे परिवार के सभी सदस्य और मेरे हितैषी मित्र परिवार की शुभ-कामनायें इनका भी बड़ा भारी हाथ है।

मेरे प्रिय मित्र श्री. एम. डी. पाटील और श्री. एस. जी. पाटील, सुभाष शॉर्टहॅण्ड ॲण्ड टाईपरायटिंग इन्स्टिट्यूशन, कुडित्रे फॅक्टरी, जि.कोल्हापूर। इन्होंने मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध को सुवाच्य रूप से टंकलिखित किया। अतएव उनके प्रति भी मैं आभार व्यक्त करना मेरा कर्तव्य समझता हूँ।

कोल्हापुर.

दिनांक : 31 मई 1993

शोध छात्र

[श्री. पंडित श्रीपती गाडे]